

विचार बिन्दु

घृणा हृदय का पागलपन है। -बायरन

लव कुश वाटिका में वनानुभव

जैसा कि हमने यहाँ स्पष्ट किया था, राजस्थान के प्रत्येक जिले में स्थापित की जा रही लव कुश वाटिकाओं आपको प्रकृति-अनुभव और वनानुभव के अवसर देती हैं। एकाग्र मन से ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों का प्रयोग कर वनों की समृद्धता का अनुभव (देखना, सुनना, सूँघना, स्पर्श करना, स्वाद लेना) वनानुभव कहलाता है। इसी प्रकार नदी, झील, तडागा, चापी, उपवन, कानन आदि प्राकृतिक स्थलों का अनुभव लेना प्रकृति-अनुभव कहा जाता है। प्राचीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक पुनर्वसु आत्रेय को स्वास्थ्य-रक्षण व चिकित्सा के लिए वनानुभव व प्रकृति-अनुभव के सिद्धांत का जनक माना जाता है। स्वास्थ्य-रक्षण और रोगोपचार में प्राकृतिक स्थलों की भूमिका का यह वर्णन आयुर्वेद में कम से कम 5000 वर्ष पूर्व का है। इस प्रकार का वर्णन ऋग्वेद, अथर्ववेद, सामवेद, यजुर्वेद आदि में भी मिलता है। वनों की संस्कृति को समाहित किये हुए वृहदारण्यक उपनिषद् भी इसी परंपरा का एक मुख्य उदाहरण है। तथापि, यहाँ हम चिकित्सा विज्ञान पर अपनी चर्चा सीमित रखेंगे। चरकसंहिता और सुश्रुतसंहिताकाल के बहुत बाद, आगे चलकर हिपोक्रैटस के ग्रंथ एथर, वाटर्स और प्लेसेस में प्रकृति-संपर्क और स्वास्थ्य के रिश्तों का वर्णन मिलता है। प्रकृति का सानिध्य हमारे संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक, मानसिक और बायोफिजियोलॉजिकल स्वास्थ्य में सुधार करता है।

आयुर्वेद स्वस्थ व्यक्तियों को विभिन्न ऋतुओं में प्रकृति-अनुभव की सलाह देता है। उदाहरण के लिये वसंत ऋतु में वनों में आई बहार का नियमित अनुभव करना चाहिये (च.सू.6.22-26, चर्यनित अंश) वसन्तःसुनुभवेकाननानायावन्मृत्। इसी प्रकार शीत ऋतु में वन-कानन की ठंडक, वहाँ का शीतल जल और पुष्पों का नियमित अनुभव लेना चाहिये (च.सू.6.27-32, चर्यनित अंश) काननानि च शीतानिजलानिकुसुमाणि च, ग्रीष्मकालेनिषेत्वा प्रकृति का यह अनुभव वस्तुतः सभी ऋतुओं में स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य के रक्षा की रणनीति के रूप में सुझाया गया है। संहिताओं में स्वास्थ्य-रक्षण और रोगोपचार दोनों के लिये ऐसे अनेक सन्दर्भ हैं (देखें, च.वि.3.260-266; च.वि.2/3, 26-30, च.वि.4.106-109; च.वि.6.17, सु.3.47.55-57 आदि)। यहाँ प्रमाण की प्राचीनता दर्शित करने के उद्देश्य से केवल कुछ सन्दर्भ ही उद्धृत किये गये हैं।

प्रकृति के साथ हम कम से कम पाँच प्रकार से रिश्ते स्थापित कर सकते हैं:- पहला- प्राकृतिक स्थलों में घूमना-फिरना व पर्यटन, दूसरा- प्रकृति के गोद में योग, ध्यान, प्राणायाम, योगसन आदि करना, तीसरा- प्रकृति की गोद में शारीरिक व्यायाम करना, चौथा- प्रकृति के मध्य या हरियाली से भरपूर स्थलों में निवास और कार्य-स्थल का उपयोग करना, और अंततः पर्यावरण, वन, वन्यजीव संरक्षण, और बागवानी और खेती-बाड़ी करना। उक्त सभी परिस्थितियों में प्रकृति के साथ जुड़ाव स्वास्थ्यकर और आनंददायक होता है।

शोध से प्राप्त प्रमाण के संदर्भ में वैज्ञानिकों के मध्य यह आम सहमति है कि मेटा-एनालिसिस के निष्कर्ष सर्वश्रेष्ठ प्रमाण के रूप में स्वीकार्य होते हैं। सिस्टेमेटिक-रिव्यू से प्राप्त निष्कर्ष भी निर्विवाद प्रमाण ही माने जाते हैं और प्रायः मेटा-एनालिसिस और सिस्टेमेटिक-रिव्यू को एक साथ भी प्रयुक्त किया जाता है। भिन्न-भिन्न समय, स्थान, और लोगों के बीच एक विषय पर किये गये अनेक अध्ययनों को समेट बटोर कर उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग द्वारा एकीकृत निष्कर्ष निचोड़ के रूप में प्राप्त किये जाते हैं। प्रकृति-जुड़ाव और दीर्घकालिक स्वास्थ्य व खुशी के रिश्तों पर कुछ चर्यनित मेटा-एनालिसिस और सिस्टेमेटिक-रिव्यू से प्राप्त निष्कर्ष आज यहाँ प्रस्तुत हैं।

प्राकृतिक स्थलों में घूमना-फिरना सुख की अनुभूति करता है। जो लोग प्रकृति से अधिक जुड़े होते हैं, वे प्रायः हेडोनिकप्रसन्नता (मौज-मस्ती की अनुभूति) का अनुभव करते हैं पर एक मेटा-विश्लेषण स्पष्ट करता है कि यह जुड़ाव गहरी खुशी, जिसे ग्रीक दर्शन में यूडायमोनिक प्रसन्नता (उद्देश्यपूर्ण और कल्याणकारी जीवन की अनुभूति), भी देता है। इस अध्ययन में 4758 लोगों के आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि प्रकृति के साथ जुड़ाव व्यक्तिगत विकास, जीवन के उद्देश्यों, आत्म-स्वीकृति, समाज के साथ सकारात्मक संबंधों और पर्यावरण के प्रति घनात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। प्रकृति से जुड़ाव रखने वाले लोग यूडायमोनिक खुशी में बढ़ोत्तरी महसूस करते हैं और व्यक्तिगत विकास के उच्च स्तर को प्राप्त करने में सफल रहते हैं (ए. प्रिटचार्ड इत्यादि, जर्नल ऑफ हैपीनेस स्टडीज, 21:1145-1167, 2020)। इसके पहले वर्ष 2014 और 2015 में प्रकाशित दो अलग-अलग मेटा-एनालिसिस में भी यह पाया गया था कि प्रकृति के साथ संपर्क मन:स्थिति, अनुभूति और स्वास्थ्य में सुधार करते हुये प्रसन्नता में बढ़ोत्तरी करता है। विभिन्न अध्ययनों से प्राप्त कुल 8,523 लोगों के अनुभव और आंकड़ों के आधार पर स्पष्ट हुआ कि जो लोग प्रकृति से अधिक जुड़े हुये हैं वे अन्य लोगों की तुलना में बेहतर सकारात्मकता, जीवनशक्ति और जीवन-संतुष्टि का अनुभव करते हैं। प्रकृति से जुड़ाव और वाइटेलेटी या जीवनीशक्ति के बीच सबसे मजबूत संबंध प्राण गया। इसके बाद सकारात्मकता और जीवन-संतुष्टि थी। दोनों ही अध्ययनों के परिणाम निर्विवाद रूप से सिद्ध करते हैं कि मानव और प्रकृति के मध्य निकट संबंध मानव को गहरी प्रसन्नता देते हैं (ए.सी.ए. कल्पटी इत्यादि, फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, 5: आर्ट. 976, 2014)। दूसरी मेटा-एनालिसिस में कुल 2356 लोगों से संबंधित 32 अध्ययन शामिल किए गये थे। प्राकृतिक वातावरण से संपर्क सकारात्मक प्रभाव में वृद्धि नकारात्मक प्रभाव में कमी लाता है (ई.ए. कर्महान, डी. एस्टेस, जर्नल ऑफ पॉजिटिव साइकोलॉजी, 10:507-519, 2015)।

प्राकृतिक स्थलों में योग, ध्यान, योगसन, प्राणायाम आदि भी आने की अनुभूति और स्वास्थ्य में बढ़ोत्तरी करता है। शोध से यह साबित हुआ है कि प्राकृतिक वातावरण में किया गया ध्यान प्रसन्नता और स्वास्थ्य दोनों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। कुल 25 अलग-अलग अध्ययनों की मेटा-एनालिसिस, जिसमें 2990 लोग शामिल थे, के निष्कर्ष बताते हैं कि शुरू से अंत तक तब तक समय मनोवैज्ञानिक, शारीरिक और पारस्परिक प्रभाव सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण पाये गये। प्राकृतिक वातावरण जैसे वन, उपवन, बगीचों, पार्क में योग के और भी कई लाभ, जैसे औपचारिक विचारशीलता की तुलना में अनौपचारिक आनंद की अधिक प्राप्ति हुई (डी. डेजेर्निस इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 16: आर्ट.3202, 2019)। इस विषय में मेटा-विश्लेषण अनुभव है कि योग करते समय जिन लोगों को ध्यानवस्थित होने में कठिनाई आती है उन्हें प्रारंभ में मनोप्रेरणा प्रकृतिक दृश्यों जैसे बहती नदी, नदी के किनारे वृक्षालय, सुन्दर झरने, घने वन, वनों में हो रही वर्षा आदि पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये। बहुत आनंद मिलेगा।

प्रकृति की गोद में शारीरिक-गतिविधि को आजकल हरित-व्यायाम कहा जाता है। यह अल्पकालिक और दीर्घकालिक सकारात्मक मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य देता है, जो अंततः खुशी का कारण है। एक बहुस्तरीय, 10 विभिन्न अध्ययनों और 1252 लोगों की मेटा-एनालिसिस से स्पष्ट हुआ है कि हरियाली में किया गया व्यायाम आत्मसम्मान और मनोदशा बेहतर करता है। जैसे तो हर तरह के हरियाली वाले वातावरणों में व्यायाम लाभकारी है, परन्तु जलाशयों, नदियों, तालाबों, झीलों के समीप व्यायाम अधिक प्रभावोत्पादक होता है। यह अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि पर्यावरण एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य-सेवा प्रदान करता है (जे. बार्टन, जे. प्रेटी, एनवायरनमेंटल साइंस एंड टेक्नोलॉजी, 44:3947-3955, 2010)।

हरियाली के मध्य निवास करना प्रसन्नता देता है और इस विषय पर भी बहुत अध्ययन हैं। उदाहरण के लिये हालीक शहरी वातावरण में पलना-बढ़ना मनोरोग विकारों का जोखिम बढ़ाता है, किन्तु रिहायशी क्षेत्रों में हरियाली मानसिक बीमारियों के जोखिम को कम करती है। इस विषय में पहला सिस्टेमेटिक रिव्यू कोई स्पष्ट सन्देश नहीं दे पाया था (देखें, एम. वन डेनगर्ग इत्यादि, अर्बनकॉन्फर्टि, 14: 806-816, 2015)। परन्तु हाल ही में अमेरिका में एक राष्ट्रव्यापी अध्ययन जो 900,000 से अधिक लोगों के बीच किया गया, यह सिद्ध करता है कि जो बच्चे सबसे कम हरियाली वाली जगहों में पल-बढ़ कर बड़े हुये थे, उन्हें अन्य ज्ञात जोखिम कारकों के प्रभाव से स्वतंत्र, मनोविकारों के विकसित होने का 55 प्रतिशत अधिक जोखिम था। हरियाली वाले क्षेत्रों में घूमना-फिरना तो ठीक है पर उससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि हमारे घरों के आसपास भी प्राकृतिक वातावरण की बहुतायत और दीर्घकालिक उपस्थिति हो। प्राकृतिक वातावरण को शहरी नियोजन में एकीकृत करना मानसिक स्वास्थ्य में सुधार लाये और मनोरोग के बढ़ते वैश्विक बोझ को कम करने के लिये एक प्रमाण-आधारित रणनीति है (के. होमामा इत्यादि, प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल अकेडमी ऑफ साइंसेज, 116:5188-5193, 2019)। इसी प्रकार चीन में 23,754 लोगों जिनकी कुल संश्लिष्ट आयु 80,001 व्यक्ति-वर्ष थी, के आंकड़ों का अध्ययन से भी अब निर्विवाद सिद्ध हो चुका है कि रिहायशी क्षेत्रों की हरियाली के साथ निकटता दीर्घायु प्रदान करती है (जे.एस. जौ, लैसेट ग्लोबल हेल्थ, 3:17-25, 2019)।

पर्यावरण, वन और वन्यजीव संरक्षण के कार्यों को सम्पादित करना तो हमारी व्यक्तिगत प्रसन्नता में बहुत योगदान भी देता है। इसमें हम केवल एक उदाहरण बागवानी का लेते हैं जिससे पर्याप्त स्वास्थ्य लाभ और प्रसन्नता मिलती है। दुनिया भर से 22 अध्ययनों को सम्मिलित करते हुये मेटा-एनालिसिस के परिणाम बताते हैं कि बागवानी में समय और श्रम लगाने से अवसाद, चिंता और वजन में कमी, जीवन की संतुष्टि और प्रसन्नता में सुधार, जीवन की गुणवत्ता और समुदायिक भावना में वृद्धि होती है। तमाम चारे अन्य कारकों को सम्पादित कर देखने के बाद भी बागवानी के महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव बने रहे। इस अध्ययन ने स्वास्थ्य पर बागवानी के सकारात्मक प्रभावों के लिये दोस प्रमाण प्रदान किये हैं। बागवानी की एक नियमित खुराक सार्वजनिक स्वास्थ्य और प्रसन्नता में सुधार कर सकती है।

उनीस हजार से अधिक लोगों पर हुई शोध बताती है कि व्यक्तिगत कल्याण और खुशी के लिये सप्ताह में कम से कम 120 मिनट प्रकृति के सांख्यिकीय में बिताइये (एम.पी. व्हाइट इत्यादि, साइंटिफिक रिपोर्ट्स, 9:7730, 2019)। विश्व भर के 37 अध्ययनों और 13,237 लोगों के आंकड़ों को समेटकर की गयी मेटा-एनालिसिस बताती है कि प्रकृति के साथ रिश्तों की प्रगाढ़ता हमारे पर्यावरण-समर्थक व्यवहार में बढ़ोत्तरी करती है (जे. व्हाइटवर्न इत्यादि, कन्वर्शन बायोलॉजी, 34: 180-193, 2020)। और, 22,427 लोगों के बीच हुआ अध्ययन यह भी सिद्ध करता है कि पर्यावरण-समर्थक व्यवहार वाले लोगों का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य और जीवन की संतुष्टि औरों की तुलना में बेहतर रहती है (जी. नेटुवेली, पी. वाट्स, पापुलेशन एंड एनवायरनमेंट, 41:347-371, 2020)।

विद्यालयों में छोटे-छोटे बगीचे तथा पौधशालाओं में थोड़ी देर के लिये कार्य कर लेने पर बच्चे प्रायः लौट कर घर में बड़े खुश होकर बताते हैं कि मज़ा आया। आप भी समीपवर्ती लव कुश वाटिका में जाकर वनानुभव लीजिये। आसपास के पर्यावरण,बाग-बगीचों, झीलों, नदियों आदि की सफाई व सुधार कीजिये। पौधे लगाइये। पाल-पोस कर बड़ा कीजिये। लव कुश वाटिका में आरोग्यकर, बहुउपयोगी एवं मनोहारी पौधों को ध्यान से देखिये-पहचानिये। मानसिक शांति मिलती है और स्वस्थ रहने की उत्कट लालसा जागती है। यह दिव्य मनोवैज्ञानिक प्रभाव औपधि की तरह कारगर है। प्राचीन, विशाल और घने श्वर वाले वृक्षों के सानिध्य का प्रतिदिन आनंद लीजिये। प्रकृति के साथ प्रगाढ़ रिश्ते बनाइये। प्रसन्नता, आत्म-सम्मान, मनोदशा, और सम्पूर्ण शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य में घनात्मक सुधार आयेगा। तनाव मुक्त और प्रसन्न रहेंगे। प्रकृति की मित्रता आनंद देती है। 5000 साल पहले आयुर्वेद ने तो यह कहा ही था अब आधुनिक विज्ञान भी इस पर निर्विवाद प्रमाण प्रस्तुत कर रहा है। संक्षेप में कहें तो: प्रकृतिमान-द्वारोपयधिकानुभूयताप्रोधातास्मरंश्वताम्, अर्थात् प्रकृति आनंददायक है, अनुभव करिए, स्नेह करिए और संरक्षित करिए।

-अतिथि सम्पादक,

डॉ. दीप नारायण पाण्डेय

(इंडियन फोरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)

(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

दो साल से अलग रह रहे दम्पति लोक अदालत की समझाइश से एक हुए

मालपुरा, (निसं)। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर व जिला प्राधिकरण के तत्वाधान में तालुका विधिक सेवा समिति मालपुरा द्वारा शनिवार को नवीन कोर्ट परिसर में एडीजे कृष्ण मुरारी जिनदल की अध्यक्षता में राष्ट्रीय लोक अदालत आयोजित की गई। दो साल से पारिवारिक विवाद के चलते अलग-अलग रह रहे पति-पत्नि ने लोक अदालत में पहुंचे अधिवक्ता रघुवीर सिंह आखंडी के अथक प्रयासों से परस्पर सहमति से विवाद का निस्तारण कर एक-दूसरे को माला पहना पुनः नवीन दाम्पत्य जीवन की शुरुआत की। रघुवीर सिंह आखंडी ने बताया कि बरवास निवासी भरत राज व नयागांव पीपलू निवासी मनीषा की शादी 6 जून 2017 को सामाजिक रीति रिवाज से सम्पन्न हुई थी। एक पुत्र की प्राप्ति के बाद दोनों पारिवारिक विवाद के चलते अलग-अलग रहने लगे थे। 29 अगस्त 2022 को



राष्ट्रीय लोक अदालत में विवाद के निस्तारण के बाद पति-पत्नि ने नया वैवाहिक जीवन शुरू किया।

न्यायालय एडीजे कोर्ट में प्रकरण पेश किया। हिन्दू मैरिज एक्ट बाबत विवाद विच्छेद प्रकरण को राष्ट्रीय लोक अदालत में रखते हुए एडीजे कृष्ण मुरारी जिनदल व समिति सदस्य

एडवोकेट नितिल कुमावत व एडवोकेट रघुवीर सिंह आखंडी की परस्पर समझाइश के बाद भरत व मनीषा ने मनगट्टाव एवं विवाद का निस्तारण कर एक-दूसरे को माला

पहना साथ रहने की शुरुआत की। प्राथी भरत राज बेरवा के पैरवीकार रघुवीर सिंह ने बताया कि दोनों के लिए लोक अदालत वरदान साबित हुई। समिति सचिव ने बताया कि लोक

एडीजे जिनदल की अध्यक्षता में राष्ट्रीय लोक अदालत आयोजित

अदालत में न्यायालय अपर जिला सेशन न्यायाधीश में पांच प्रकरणों में 14 लाख 84 हजार रूपये के अवाई सहित सिविल के एक व आठ वैवाहिक विवाद, तीन राजीनाम फौजदारी प्रकरण, एडीजे कोर्ट के कुल 17 प्रकरणों का निस्तारण हुआ। एसीजेएम न्यायालय के 14 फौजदारी, एनआईएक्ट के 6 सहित 20 प्रकरणों का निस्तारण हुआ। न्यायालय एमजेएम में 13 फौजदारी, 6 एनआईएक्ट व सिविल के 21 सहित 40 प्रकरणों का निस्तारण हुआ। राजस्व न्यायालय के 2, बैंक रिकवरी के 4, अन्य विभागों के 43, प्रकरण निस्तारण कर 11 लाख 45 हजार 225 रूपये का राजीनामा हुआ।

तीन सहरिया परिवारों को ग्राम पंचायत ने पुश्तैनी जमीन से बेदखल किया

बारा, (निसं)। जिले के आदिवासी सहरिया जनजाति को जहां सरकार राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने का भरसक प्रयास कर रही है। वहीं स्थानीय प्रशासन इसमें रोड़ा बनकर उनके रोजी-रोटी का जरिया ही छीनने पर आमादा है। ऐसा ही एक मामला किशनगंज रहसौली की ग्राम पंचायत गरड़ा का सामने आया है। यहां तीन भाईयों को ग्राम पंचायत की ओर से पुस्तैनी जमीन से बेदखल करने का फरमान जारी कर दिया।

ग्राम पंचायत का कहना है कि यह भूमि अस्पताल के लिए आवंटित कर दी गई है। जिस पर भवन बनाया जाएगा। इस फरमान के बाद उन्हें ठेकेदार की धमकाया गया कि जमीन से बेदखल नहीं हुए तो वह बुलडोजर लाकर फसल नष्ट कर देगा। भयभीत होकर दो भाई परिवार सहित कलेक्टर के पास फरियाद लेकर आए। लेकिन जिला कलेक्टर के बाहर होने से उन्हें निराश होकर गांव लौटना पड़ा।

गरड़ा की इंद्रा कॉलोनी निवासी राजेंद्र सहरिया व राजकुमार सहरिया विनोद सहरिया पुत्र प्रभूलाल ने ज्ञापन में बताया ग्राम पंचायत में हम तीन



दो भाईयों का परिवार फरियाद लेकर कलेक्टर के पास पहुंचा।

भाईयों की शामिलता पुस्तैनी कब्जाशुदा 7 बीघा जमीन है। जिस पर उनके दादाजी व पिताजी खेती आ रहे थे। इसमें प्रार्थी राजेंद्र व राजकुमार के पास 2-2 बीघा व विनोद के पास 3 बीघा जमीन हिस्से में है।

जिसकी ज़ुमाना रसीदें भी प्रार्थी के पास वर्ष 1980-85 से अब तक की मौजूद है। हम इस जमीन का ज़ुमाना हर बार भरते आ रहे हैं। लेकिन पिछले

माह जनवरी में ग्राम पंचायत द्वारा नोटिस भेज कर उन्हें इतला दी गई कि यह जमीन अस्पताल के लिए आवंटित कर दी है।

जिसे तुरंत खाली करो। जबकि उनकी यह पुस्तैनी कब्जाशुदा जमीन आबादी में आ चुकी है और हमें सरकार की ओर से इसे अलोट कराने के भरोसा भी दिया जाता रहा है। पिछले सप्ताह एक ठेकेदार आया और हमें धमकाने

लगा कि तुरंत फसल काट लो, वरना बुलडोजर से नष्ट करवा दूंगा। इस जगह पर निर्माण कार्य करना है। ठेकेदार और ग्राम पंचायत प्रशासन द्वारा मिल रही इन चेतावनियों व धमकियों से उनके परिवार आहत है।

तीनों भाईयों के 4-4 बच्चे हैं। जिनकी पढ़ाई-लिखाई और परिवार के खर्च की चिंता सताने लगी है। वे केवल साक्षर हैं। शिक्षित नहीं होने से अन्य

ठेकेदार ने धमकाया कि जमीन से बेदखल नहीं हुए तो वह बुलडोजर लाकर फसल नष्ट कर देगा

ठेकेदार और ग्राम पंचायत प्रशासन द्वारा मिल रही धमकियों से परिवार आहत में

कलेक्टर को ज्ञापन देने आया दो भाईयों को परिवार, निराश होकर लौटा

रोजगार भी नहीं कर सकते हैं। परिवार के भरण-पोषण का कोई और जरिया भी उनके पास नहीं है। मेहनत-मजदूरी व खेती कर जैसे-तैसे हम परिवार का गुजर बसर कर रहे हैं। अस्पताल के लिए अन्यत्र खाली जमीन आवंटित करवाई जाए। उन्हें जमीन से बेदखल व फसल नष्ट करने की कार्यवाही नहीं की जाए।

43 आर्डर रैजिमेंट ने स्थापना दिवस मनाया



जनरल ऑफिसर कमांडिंग लेफ्टिनेंट जनरल राकेश कपूर की अध्यक्षता में स्थापना दिवस मनाया।

जैसलमेर, (निसं)। 43 आर्डर रैजिमेंट ने राष्ट्र की सेवा में अपने 43वें वर्ष के आगमन का जश्न मनाया। इस अवसर पर सेवारत और सेवानिवृत्त अधिकारियों, जूनियर कमीशंड अधिकारियों, अन्य रैंकों और परिवारों के साथ-साथ रैजिमेंट के दिग्गजों की उपस्थिति रही।

राकेश कपूर ने की। 43 बख्तरबंद रैजिमेंट का आदर्श वाक्य "युध्यास्व विगत ज्वार" है, जिसका अर्थ है, एक शांत और दृढ़ मन से लड़ना।

जैनसंपर्क अधिकारी कर्नल अमितभार शर्मा के अनुसार आयोजन की अध्यक्षता कोणाकं कोर के जनरल ऑफिसर कमांडिंग लेफ्टिनेंट जनरल

भामाशाह ने स्वास्थ्य केन्द्र के लिए दान दी एक करोड़ की भूमि

कोटपूतली, (निसं)। विकास में न केवल सरकार, बल्कि भामाशाहों का भी अहम योगदान होता है। कोटपूतली क्षेत्र में इसके कई बड़े उदाहरण मौजूद हैं। इसी क्रम में अब समीप के रायकरणपुर गांव में स्व.भौरलाल शर्मा के बेटे भामाशाह कृष्ण कुमार शर्मा ने करीब एक करोड़ रूपय की भूमि जनता की सेवा के लिए दान कर दी है। इसी भूमि पर रविवार को राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का शिलान्यास होगा।

शनिवार को पर्यटकों से बातचीत करते हुए भामाशाह कृष्ण कुमार शर्मा ने कहा कि वे अपने स्तर पर समय-समय पर निर्धन दिवतियों की शादी, कंबल-स्वेटर वितरण, निर्धन परिवारों का सहयोग सहित विभिन्न सामाजिक व धार्मिक कार्यों में अपना योगदान देते हैं। भामाशाह कृष्ण कुमार शर्मा ने कहा किशहर में ब्राम्हण समाज के लिए भूमि उपलब्ध कराने की भी हमने घोषणा कर रखी है। जो भी जगह उपयुक्त होगी, उसे खरीदकर वे समाज के लिए दान कर

इसी भूमि पर आज राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का शिलान्यास होगा

देंगे। रायकरणपुर पीपुल्स के लिए जगह नहीं मिल रही थी। ग्रामीणों की परेशानी को देख उन्होंने उक्त भूमि को दान करने का निर्णय लिया। रविवार को मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक व गृह राज्यमंत्री राजेंद्र सिंह यादव पीपुल्स की शिलान्यास करेंगे, जबकि अध्यक्षता प्रधान नेहा गुर्जर करेंगी। इस दौरान विशाल भंडारे का आयोजन होगा और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जायेंगे। वार्ता के दौरान बखराणा दुर्गा माता मन्दिर के महंत गुरुदास महाराज, ब्राम्हण समाज के प्रदेश संयोजक पं.सूर्यकांत शर्मा, नगर अध्यक्ष बजरंगलाल शर्मा, पं.किशोरीलाल शर्मा, जर्नादन पटवारी, नवरतन शर्मा सहित समाज के कई लोग मौजूद रहे।

राशिलक रविवार 12 फरवरी, 2023



पंडित अमल शर्मा

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2079, स्वाती नक्षत्र रात्रि 2:27 तक, गंड योग दिन 3:34 तक, वणिज करण प्रातः 9:46 तक, चन्द्रमा तुला राशि में संचार करेगा। ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-तुला, मंगल-वृष, बुध-मकर, गुरु-मीन, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में। आज रवियोग रात्रि 2:27 तक है। त्रिपुष्कर योग रात्रि 2:27 से सूर्योदय तक है। भद्रा प्रातः 9:46 से रात्रि 9:46 तक है। महाप्रात योग दिन 10:30 से दिन 3:00 तक है। सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:33 से 9:55 तक, लाभ-अमृत 9:55 से 12:41 तक, शुभ 2:02 से 3:24 तक। राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:10, सूर्यास्त 6:12

मेष परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। आज सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

मिथुन परिवारों के व्यवहार के कारण मन विनम हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी।

कर्क घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

सिंह परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

कन्या आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। कार्य सुगमता से और योजनासुर बनने लगे। मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

वृश्चिक घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अर्नाल कार्यों में समय खपत होगा। मन में असंतोष बना रहेगा।

धनु आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बने लगे। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी और परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर अपने अति आवश्यक कार्यों की प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों में आ रही अड़चने दूर होने लगेगी।

कुंभ नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आस्थासून प्राप्त होगी। अटक हुए कार्य बने लगे। घर-परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। आज धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

मीन चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।